

म
डाकरी वद त नि प्रि सुता रेत वा वध प ना छु ॥ ॥ गुड्डी जी पद्म सीता ॥ सिव दन धत्री
लादिका सुद ना ए अदा ह ले दि नै धा व सिख ग रू नि क व द क र सु च क द क द ल
व य द न गि द न ध ॥ पा व ख द ड क र ॥ गु लै मो म य वी ल र य म पी व म गी
सु दा वा यु ना छु ॥ ॥ गुड्डी जी महा ल ग म नि रै प ड प म न ना न पा न ल सु दा नी मि त
व द्या मु क हा सि ता ॥ ॥ प्रा ग य स्या कू मा नी र म द न र क ल अ य माला ड य मी
म धा न प्रा व नू पा वि कु लि व द ना वा र व ल नि र म य र द नू पा र म
क र दू ग म म लु माला व द नी सा द वी द व द य वि द न र म य र द नू पा र म

[illegible]

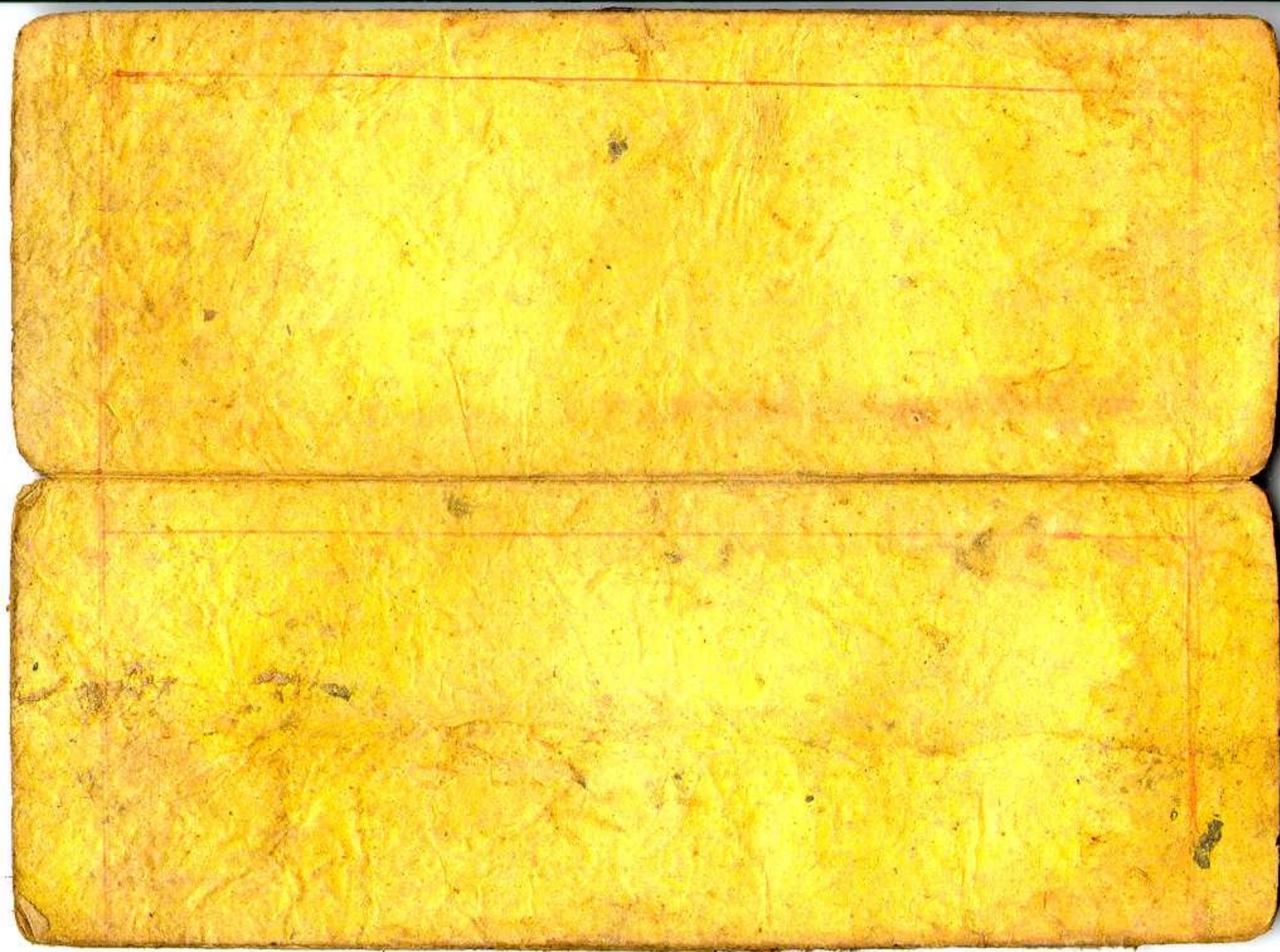
वि
 गं। आत्मा वीर्यं प्रसूतं सुपतिदधनं पादपुष्पासविन्दुनामिधौ। सुपुष्पैरुवलयद। अवाहवा
 विद्युन्नाज॥ कर्णविवरकृष्णं। ललाटे द्विहात्रकं। संपुष्पविधिवरुक्ष्मा नमान्ति विद
 दन्ते॥ ॥ इंद्रीयवृद्धाधिकारी मनुष्यतनव निरुका ललाटीरुवा नी। पीयूनीकुट्टिकाद्या
 नवनवकनिका सिद्धिलक्ष्मीपनादी॥ लसन्निभवाक्वनाख्या प्रितुव लजने नी। नाजना
 जधरीत्वा॥ अनामक नूपासकलसूजननी। यो सिद्धकुमात्री॥ अथ कर्णना
 धात्रकृतिवृत्त॥ वस्त्रालोकमलविन्दु। महा माया॥ श्रीसर्वार्थ। प्रपुष्पक्षदि॥ द
 वाचाय पूजनं॥ चन्दनादिदक्षिणं॥ चन्दनसिन्दूरमाहनीसंगुलीनीवादि॥ समयस्तु

[illegible]

खञ्जयखलुना। आयभाके काय्यापिगत्यत्रैष शुक्लदत्तयाध्या। दूरिवत्तुना धनमास्तु ग।
 ॥ वामं भुवः रूपाय कटिद्वयनायात्र ईषा कत्राला प्रोटी निर्मा सदहा द्वित्रितानि
 खलित्वाकोत्रकणीयिनः ॥ देयानां मूढमालारु लीगनमूनिरिध्वानूरिद्विचितांगी
 खद्वाम्मद्यद्वहसायसगुममत्रिपूच चिता युगसम् ॥
 गगपशुपूजा ॥ पशुजलनयादल ॥ चन्दलसिन्दूरपूष्यादिदयः ॥ अथगुलनाध
 नूमडा ॥ पशुमशुकान ॥ वंज पशुयाभसय विद्रुह विध्वक मयिधीमहि ॥ गन्नाडीव
 पुचादयाः ॥ ॐ अद्यादियजमानस्यतिवक्ति देवतयशुगुलस्यददः ॥ वंज पशु

गृहामिदं प्रसादात्प्राप्तं विना भूत्या विश्वं सर्वं चित्तं कुरुते ॥ अथ पूर्वज
नमस्ते वा पयःपुत्रं जन्मन जायते सर्वपापविनिर्मुक्तं स्वर्गलोकं समर्पकं ॥
महायके ॥ यद्युत्तरार्धे ॥ अथ यद्यपि चोद स्वानं कविगलसहायके ॥ अथ मध्य
जो उद्यमचभये समासत्रिंशत् ॥ २२ स्वाहा ॥ ॥ अथ पूर्वज उद्यम ॥ वाकनकाय ॥
समयदवस्था ॥ दवस्थाद्वयपूजाद्विधिदानं ॥ अथ दवस्था विवाद ॥ अथ अ
सिवादी ॥ अथ सभा वलि ॥ अथ ॥ अथ साक्षि ॥ ॥ अथ मध्य विवादी ॥ अथ साक्षि
यास्तु ॥ अथ कोमानी वाल लवचकोनक्षत्रं गायत्रीनी ॥ याम्यापी विधिनिर्णयवद

ददीषणम्नायसदावृत्ति ॥ यस्याहं सुकर्मणि ॥ निपुष्टिकतानिच ॥ माहनीसंरनव
 स्यविद्वेषमालवाटनी ॥ १० ॥ श्रीरुद्रदिल्लीसिद्धिपेदायक ॥ सर्वलोकप्रियवत्स
 सर्वसोखसमन्विता ॥ पूजाकार्य ॥ १० ॥ दीमानसर्वकामरुलीया ॥



[illegible]

न जथासुहृदि ददन्तु नृकंसर्गनमामि ॥ सुत्रमष्टुल ॥ यास्तु ज्ञानविषयसहस्रसमानवर्धः सी
कृतकलिंगवत्तु उच्यते ॥ ४॥ ॥ मानन्दवनवाभाक् द्विकर्णः गहमेनभाभुजुनमगतिवा
य ॥ कलङ्गाया ॥ ततोषधसकलतीर्थजस्तनूपह ॥ सच्चिदवस्तुसुखमहितपूषामार्त ॥ यद्
पूषाभ्यविषयमूनिह ॥ यसस्तु तं कूमरं लिखित ॥ किंयुतनमामि ननुपकि ॥ निर्यनमामि
नूपकि गहमेन ॥ दिवाद्यसिद्धिसकलानपिमानवोद्यान ॥ यथासद्वृत्तत्र ॥ पंकज ॥ ४॥
पङ्कजसंयाद्यनतिदिनिमष्टुलराजलक्ष्मी ॥ ४॥ ॥ संप्रधानविषमाहि विद्वज्जना
संजिवनाय एवमप्रतिवृत्तिमुत्तु ॥ सप्तषणा ॥ ४॥ लिखितददयस्ति ॥ वलित्वनूपयमिह

सुंद निरुद दानु ॥ धाकधु ॥ दिशविदु न सकिलान सुवाधवथा ॥ नैव दि गैय धम ता नि निराज
युवा ॥ धाकधु कटा क नव जीवन डुरुमर्क ॥ नाम सल वृधु न प्रधी कधुनाथ ॥ वस्त्रायिनी ॥ हंस
मिता गानिक मधुलू ॥ दसर्ग ॥ न नीरुम दल ति कू लुल मावहनी ॥ याकाश्च ना ए नूह के
गलि विदु लार ॥ यास्मी कला तु सम सा शुभ मङ्ग लाय ॥ माह भव नि ॥ चन्द्रा ॥ धो गद द्वा द्वि क
शुभ कानी ॥ धाकि वि ॥ न न धा नि ॥ धाष जटा कला य ॥ न न ग य वि धनी वृष हं नि गाया ॥ माह भव
नी ए व तु सा शुभ मङ्ग लाय ॥ कोमा नि ॥ सिन्दूर पू ॥ सद ॥ भद्रु ति मावह नी विद्युत्य का
भायु ति मा स ग नि द क्ष ना मायू र का स न समा सि ॥ गोवाल नूपी ॥ कोमा नि का ए व तु म ॥ शुभ

मङ्गलाया ॥ वेषूवी ॥ गमनमतिद्युमिनिरागमनसुखः सुदृष्टपद्मसुखिनवजोवना ॥ १८ ॥
 सिचकण्ठयाकिञ्चातूह ॥ १९ ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥
 कदलाधिकुननकाकी ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥
 तचातूहमा ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥
 नमूचनहनी ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥
 चन्दनमासि ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥
 खडाङ्गदिलि ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥ धीवेषूवीसग ॥

श्रु काननमग ॥ १ ॥ सि सदायसना ॥ महालक्ष्मी ॥ सोदयसात्रु विनाकमलाय ताक्षी पीन
 सनीललीलहास ॥ २ ॥ एनाथा ॥ स्वङ्ग विभू लवत्रदा एयवा सित्रया लक्ष्मी नमामि
 मरुति मरुनी यत्रुपी ॥ एणवती ॥ वहु ॥ ३ ॥ मृदुमनिदुर्दयत्रक वीर्य हन्तानि ॥ ४ ॥ मृ
 यूनत्रवच ॥ ५ ॥ मृग ॥ हनिस्मत्र वृद्धना चित्तलीकनाय समप्रिय ददुषण विनाश
 नीया ॥ वागीध्वनी ॥ उरुङ्ग पीनस्तन ॥ ६ ॥ तिरहालमाला ॥ युद्धसि तारया किनावनदा वि
 भ ॥ ७ ॥ वधू कवर्ण ॥ सद्यसावधायनी ॥ वागीध्वनीरुत्र उमक ॥ ८ ॥ कुकुकाभ ॥
 म ॥ ९ ॥ अश्व ॥ सनस्त ॥ मदमूदितामूखी ॥ वडवधू सदाया ॥ वसा ॥ १० ॥ द्रव ॥ व ॥ स्व नदिन

[illegible]

[illegible][illegible]

विन्दुमुद्रा ॥ गथासिद्धि ॥ सिलगणना ॥ यत्रिकीता ॥ नवैश्वर्यात्महाद विमलारण्यवर्णिन
 मस्तुते ॥ नै ॥ अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च
 च ॥ अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 यं च ॥ अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 का ॥ पीताचयान्दनाक्षयात्रिधस्तुतं निहिता ॥ महिषास्तुतमानमस्तुतं नमि
 नवडकिराक ॥ स्तुत्यावहनुद्वारं नवचंद्रिद्वयद्विक्रमात् ॥ नवैश्वर्यात्महाद
 विमलारण्यवर्णिनमस्तुते ॥ नवैश्वर्यात्महाद ॥ पीताचयान्दनाक्षयात्रिधस्तुतं

राजपदं चंद्रवदनिर्दुर्लभं यत्र नमः स्तुत्यावहनुद्वारं ॥ नवैश्वर्यात्महाद
 नमः स्तुत्यावहनुद्वारं ॥ नवैश्वर्यात्महाद ॥ नवैश्वर्यात्महाद ॥ नवैश्वर्यात्महाद
 हाविद्यायां अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 दसं चंद्रवदनिर्दुर्लभं यत्र नमः स्तुत्यावहनुद्वारं ॥ नवैश्वर्यात्महाद
 अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा
 अथर्षायादसहस्रं चरुद्वारं ॥ नमस्कृतं विष्णुं नृपवधुं च वधुं च ॥ नव मिवा

था निमूदादष्टायग ॥ तिरुणावतियुडनं ॥ ॥ गनीकायाय निवृद्धा ॥ न्यास ॥ उं दी स अ मु
रुन ॥ उं दी स द द या न ॥ उं दी स नि र भ स्वाहा ॥ उं दी स नि र्वा र्थ वा य ग ॥ उं दी स क व
चा य ह ॥ उं दी स न य गाय व र ग ॥ उं दी स अ सु रु त्र ॥ अा स न र ॥ अा म ना दि पू
सि का स मा य वा दू कां ॥ य द्वा स ना य वा दू कां ॥ सिं हा स ना य वा दू कां ॥ म हि वा स ना य
वा दू कां ॥ ध्यान ॥ उं दी का या य नि मा हा दे वि हं म ऽ ध्या मा ण रु पि नी ॥ सर्वा लं का न भ
रा च पि नी ॥ ना य था ध ला ॥ द्वा ला द्वा लि त म ध स्म क्रा वे डी त्रि ग वि र्य हा ॥ द्वाद षा सा
रु डा दि वि वा स द क च क्ष ल णी ॥ ख द्म वा न त थ षा कि ॥ प्री णू लं च द कि न ॥ रु लं ध र्या वू

संयासं कथं लं वामक क प्र ॥ सिद्धासन सन्मातृ धाम सिद्धायाद ग जिता ॥ ४४ ॥ रं क द व द्या ता
नी का ध्वज क्षत्री द्या त नी ॥ ध्याय माना सदा द वि सर्व ॥ ४५ ॥ क य क प्रि ॥ ४६ ॥ ना द्या द व ना व
ना का या य नी न भा मु ॥ ॥ ध्यान यु र्वा पाद का ॥ मूत्र म नु न री या ज त्री ॥ ४७ ॥ र्वा स ध्या म
हा दू ण चं दिका या य ध्य न म या द का ॥ ४८ ॥ व त्रि ॥ उ व ध्व नि व ड ॥ न्या स ॥ नृ ॥ ता द द या य
न म ॥ या व ॥ ४९ ॥ ती ति त्र म स्या हा ॥ ५० ॥ ति ति रा य व ष त ॥ ५१ ॥ ति क व चा य दू ॥ ५२ ॥
तां म उ र्वा य धी ष ट ॥ ५३ ॥ ता ॥ ५४ ॥ ता य दू ॥ ५५ ॥ ति न्या से ॥ ५६ ॥ सा स न ॥ ५७ ॥ ता द
य पु षि का स ना य या व ॥ ५८ ॥ व द्मा स ना य या व ॥ ५९ ॥ सि द्हा स न या व ॥ ६० ॥ न

ॐ नमः ॥ युक्ते नमः ॥ वाक् ॥ आदि ॥ उज्ज्वलानामनमः ॥ श्रीगुरुद्वयं नमः ॥ रुद्रोक्तस्य सदान्वसिप
त्रवर्गपूजा निमीयर्थः कर्तुं श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ पूज्यं नमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
कालं ति ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
यामि ॥ किलि ॥ विष्णुकाकि ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
शुद्धपाप ॥ जलपाप ॥ त्वत्पुत्रि ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
लि ॥ प्रिवलि ॥ नवात्मायुजनं ॥ ॥ धनं ली ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
॥ ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥

नामलपीथयजालानन्दनाथयजाल ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
पुल्लुनन्दनाथयजाल ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
कोमध्वरीपत्राम्नाश्रीपादकापूजयामि ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
पापु ॥ वृक्षादिय ॥ युतासनपापु ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
वलि ॥ धन ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥
पद्मनाभसमय ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥ श्रीगुरुभ्यामनमः ॥

दिवा नानाप्रहसनाद्यता । नानाप्रसवनी देवाः खेला क नान्य विद्यत । षड्पासा क्र सा
सयः कपात्रक ॥ ४ ॥ नथः शूत धाय ॥ नवमनुवनपदा । रुत कं धनू पाणि ॥
षड्पासकमकन ॥ भूलमुद्र प्रवीणावः । गलनी वातत्र क प्र । सुलु वरु यित्वा ॥ गित नू यन
रा वि ननि ॥ ॥ गदि ध्वनी त कात्र का य ध्वान धूर्षु पापू ॥ ॥ ग्रा वा हुनादि ॥ गया श्रुती ॥ ॥
हं र भानन्दस कि रै रवानन्दवी राधी यतय सं रणी पणु पति ड नरु रै रवा य पापू ॥ ३ ॥
असिनी गम दि ॥ ॥ गं सं रै रवानन्दणी महा विद्या रा श्रु ध्वनी हं रणी गु श्रु ध्वर्य वरा सा ध्वी पा
पू ॥ ३ ॥ ॥ गं वरुणा ध्वी दि ॥ ॥ गं प्रयाग दि ॥ ॥ प्रयाग वरुणा का नरुद्र । जयनी । चनी । र । का

॥ २ ॥
 मूकः शर्वाकारः ॥ जैगदा किंवादि ॥ विष्णुसया निमूडा दमये ॥ ॥ गता सिद्धिलक्ष्मिपूजनं ॥ चार ॥
 जैगदा संभारुय हट ॥ ॥ प्रगासनाय पायू ॥ जया श्रुति ॥ जैगदां जैगदां जैगदां जैगदां नमः ॥
 ॥ सिद्धिलक्ष्मी दये यया श्रुतिपूषी पायू ॥ वलि ॥ वलिमाल ॥ वलि ॥ सीइत ॥ स्वान ॥
 मसादका ॥ यया ॥ ययादीपः नवद्यः प्रतिष्ठा ॥ जयः स्तुति ॥ ॥ ॥ गता सेन पूजनं ॥
 जैगदा दया दिव्या ॥ अस्त ॥ अक्षरादि ॥ जैगदा सनाय पायू ॥ जया श्रुति ॥ जैगदा ॥
 हं हं हं ॥ जैगदा सेन वायन मया पायू ॥ ३ ॥ अस्त ॥ अक्षरादि ॥ ॥ गता सेन पूजनं ॥
 जैगदा दया दिव्या ॥ अस्त ॥ अक्षरादि ॥ जैगदा सनाय पायू ॥ जया श्रुति ॥

